रात्रि क्लास :– 21/10/68 :– बच्चे जो आये हैं उनको निश्चय है कि यहाँ भगवान पढ़ाते हैं। यह गीता का एपिसोड है ना। कोई को पता नहीं है। अभी तुम बच्चे जानते हो मनुष्य से देवता बनने आये हैं। भगवान बाप पढ़ाते हैं। हमारी एमआबजेक्ट यह है। हम ही थे 84 जन्म पूरे किये। सभी कहते हैं नर से ना0 नारी से ल0 बनने यहाँ आये हैं। जिनको निश्चय है वह हाथ उठावे। क्या यह स्कूल नहीं है? फिर हाथ क्यों नहीं उठाती हो। निश्चय नहीं है ना। भगवानुवाच हे, बच्चों हम तुमको राजाओं का राजा बनाता हूँ। यह है गीता। तुम बच्चे जब जानते हो स्कूल में जब पढ़ते हैं पहले2 तो बैरीस्टर वा डॉक्टर नहीं हैं। डाक्टरी की पढ़ाई पढ़कर डाक्टर बन जाते हैं। फिर कोई डॉक्टर बहुत होशियार बहुत कमाते हैं। कोई 50 हजार भी, कोई लाख भी मास में कमाते हैं। बैरीस्टरों में भी ऐसे होते हैं। नम्बरवार। किसी को तो एक केस में लाख भी मिलते हैं। कोई को तो देखो फटा हुआ कोट पड़ा होगा। तो बाप समझाते हैं कोई भी मनुष्य को भगवान नहीं कहा जा सकता। कृष्ण भी प्रिन्स था। राधे और कृष्ण प्रिन्स प्रिन्सेज हैं अलग अलग राजाओं के बच्चे हैं। कृष्ण जरूर महाराजा बना होगा। भारतवासी पत्थर बुद्धि कुछ भी नहीं जानते। अभी तुम बच्चे जानते हो हम भविष्य में लक्ष्मी नारायण बनेंगे। जो ही छोटेपन में राधे–कृष्ण हैं; परन्तु यह किसको भी पता नहीं है। सन्यासी मठ तो पीछे स्थापन हुआ है। तो तुम बच्चे समझते हो हम नर से ना0 बनेंगे। पहले तो जरूर प्रिन्स बनेंगे। अभी तो भारतवासी का क्या हाल है। बिल्कुल ही तमोप्रधान बुद्धि हैं। वह फिर इतने तमोप्रधान नहीं हैं; क्योंकि इतना सुख नहीं देखा है। भारत ने बहुत सुख देखा है। तो दुख भी बहुत देख रहे हैं। यह नालेज तुमको ही मिलती है। तुम जानते हो बरोबर भारत में पवित्र गृहस्थ आश्रम था। अभी है पतित। इसलिए पुकारते हैं। हम पतितों को आकर पावन बनाओ। वही लिबरेटर है। लिबरेटर भी एक है, गाइड भी एक है। तुम जानते हो हम पवित्र बनते हैं। पवित्रता पर ही बहुत हंगामा होता है। वहाँ नंगन नहीं होते हैं। योगबल से राजाई स्थापन करते हो तो योगबल से क्या नहीं

हो सकता। वह है ही वायसलेस वर्ल्ड। यह है विषस वर्ल्ड। अभी तुम बेगर से प्रिन्स बनने वाले हो। भारतवासी ही स्वर्गवासी बनते हैं। स्वर्ग में है ही देवी देवताओं का राज्य। इस समय भारतवासी नर्कवासी हैं। बाबा पूछते हैं जिस समय हाथ उठाया हम नर से ना0 बनेंगे और बनने ही आये हैं। पढ़ाते भी हैं निराकार भगवान। उनका यह है रथ। सो भी बहुत जन्मों के अन्त का जन्म है। दूर देश का रहने वाला कृष्ण थोड़े ही है। दूर देश में तो आत्माएँ रहती हैं। आत्माएँ बाप को बुलाती हैं ऊपर से आओ। है तो निराकार। वह निराकार शिव आकर बतलाते हैं। अभी तुम जानते हो हमारे धर्म की स्थापना हो रही है। पवित्र भी बनते हैं राजा भी बनते हैं। अभी तुम पवित्र बनते हो। बाप को याद करते हो। इसमें ही माया विघ्न डालती है। युद्ध इसमें ही चलती है। अभी तुम कहते हो हम ना0 बनेंगे तो वह खुशी स्थाई होनी चाहिए ना। यह है बेहद की पढ़ाई। तुम बच्चों को निश्चय है हम पुरुषार्थ करते हैं सतोप्रधान बन फुल पास होवे; परन्तु सभी तो बन नहीं सकेंगे। कई को ज्ञान के आधार से खुशी होती है। नई दुनिया है पावन दुनिया। यह है पतित दुनिया। तो अभी तुम जानते हो बेगर टु प्रिन्स बनेंगे। तुमको कोई प्रिन्स नहीं पढ़ाते हैं। कृष्ण को प्रिन्स कहा जाता है। वह तो है सतयुग का जन्म। यह तो बाप कहते हैं मुझे शरीर का आधार लेना पड़ता है। कोई कोई अक्षर गीता के सत्य हैं। बाप बच्चों को भी कहते हैं यह ओपीनियन लिखाओ। जज करो गीता किसने सुनाई। नालेजफुल ज्ञान सागर किसको कहते हो? कृष्ण को तो कह न सकेंगे। उनमें वह ज्ञान है नहीं। न नारायण में ही है। कृष्ण तो छोटा प्रिन्स है। अगर ना0 में यह ज्ञान होता तो यह ज्ञान परम्परा चलता। तो तुम बच्चों के अन्दर में अति इन्द्रिय सुख रहना चाहिए। स्कूल में टीचर अथवा स्टुडेन्ट समझते हैं यह अच्छे2 मार्क्स से पास होंगे। इतनी ब्रह्माकुमारियाँ हैं इनमें होशियार भी बहुत हैं। अच्छे ते अच्छे नम्बरवन मम्मा थी। फिर कहेंगे कुमारका है, जनक है, मनोहर है। नम्बरवार तो है ना। एक जैसे तो हो न सके। तो अभी तुमको नारायणी नशा है हम बेगर टु प्रिन्स बनते हैं। खुशी होनी चाहिए ना। यहाँ तुम नई दुनिया के लिए ही पढ़ने आते हो। नर्क पुरानी दुनिया विनाश हो जावेगा।

इनको ही महाभारत की लड़ाई कहा जाता है। तो बच्चों को निश्चय है ना। पुरुषार्थ तो सभी का चल रहा है ना। बाप पतित–पावन वर्ल्ड आलमाइटी अथार्टी है। ल0ना0 को वर्ल्ड आलमाइटी अथार्टी नहीं कहेंगे। बाप ही सभी वेद–शास्त्रों आदि को जानते हैं। उस बाप का कोई बाप होगा क्या? वह तो ऊँच ते ऊँच है। खुद कहते हैं मैं नालेजफुल हूँ। मैं सभी का बाप हूँ मेरा कोई बाप होगा? मैं सभी का टीचर हूँ मेरा कोई टीचर होगा? मैं सभी का सदगुरु हूँ मेरा फिर कोई गुरु होगा? नहीं। मेरा कोई बाप, टीचर, गुरु हो न सके। मैं ही सभी का बाप हूँ। मेरा कोई गुरु हो न सके और सभी के होते हैं। मैं सभी को(का) सत बाप, सत टीचर, सद्गुरु लिबरेटर हूँ। अच्छा मीठे2 रूहानी बच्चों को रूहानी बापदादा का यादप्यार गुडनाइट और नमस्ते।

प्वाइंट्सः– ब्र0वि0शं0 का भी ज्ञान है। अर्थ भी है। ब्रह्मा द्वारा स्थापना, विष्णु द्वारा पालना। मुख्य है दो बात। स्थापना और पालना। दोनों रूप खड़े हैं बाकी विनाश तो होना ही है। ब्रह्मा के बच्चे जो पैदा होंगे वही देवता बनेंगे। शंकर का कोई वृतान्त निकल नहीं सकता। सूक्ष्मवतन में ऐसी कोई चीज़ होती नहीं। आकाश में कुछ है थोड़े ही। एरोप्लैन पक्षी आदि उड़ते रहते हैं। पक्षियों के अकल से ही उन्हों ने कापी किया है। चिड़िया आदि कैसे उड़ सकती है तो उन्हों को देख फिर बैठ एरोप्लैन आदि बनाई है। जो फिर वहाँ भी होगी। अभी यह है माया का पॉम्प। इनको कहा जाता है फॉल ऑफ पॉम्पिया। पतन और उत्थान। कितने बॉम्स आदि बनाते हैं। समझते हैं इनसे विनाश होगा। फिर भी बनाते रहते। समझते हैं लड़ाई तो लगती ही रहती है। कलियुग अजन छोटा बच्चा है। 40 हजार वर्ष आयु देते हैं। बाप सभी को मिलाकर 5000 वर्ष कहते। अभी बाप बैठ समझाते हैं बच्चे मामेकम् याद करो। तुम भी यहाँ हो, बाप भी यहाँ ही है तो इनको ही जीवात्माओं और परमात्मा का मेला कहा जाता है। यह है कल्याणकारी मेला। बाप आते हैं बच्चों को सुखधाम, शान्तिधाम जाने का रास्ता बताने तो उनकी मत पर चलना चाहिए ना। अच्छा